* श्रीस्तुति *

अनन्त-ब्रह्माण्ड की ऐश्वर्याधिष्ठात्री, सकल ऋद्धि-सिद्धि की अधिष्ठात्री, समस्त सुख-सौभाग्य और ऐश्वर्य की दात्री, कामेश्वराङ्कनिलया, अनन्त-ब्रह्माण्ड-जननी, पराम्बा महात्रिपुरसुन्दरी ! तुम्हारे पावन चरण-कमलों में सहस्र-सहस्र विनम्र सादर सभक्ति प्रणिपात स्वीकार हो। हे कुण्डलिनीरूपे भगवती ! तुम मूलाधार में पृथ्वी तत्त्व, मणिपुर में अग्नि तत्त्व, स्वाधिष्ठान में जल तत्त्व, अनाहत में वायु तत्त्व, विशुद्धि में आकाश तत्त्व, आज्ञा में मनस्तत्त्व को पार करके सहस्रार में अपने पति परम शिव के साथ एकान्त में विहार करती हो। शरणागतरक्षिके माँ, प्रायः अन्य सभी देवतागण अपने करों से वर तथा अभयदान देने वाले हैं, एक तुम ही ऐसी हो जिसने वर तथा अभयदान का अभिनय नहीं किया है। शरण्ये माँ, भक्तों का भय से रक्षण करने तथा उन्हें अभीष्ट वर देने के लिये तुम्हारे चरण ही समर्थ हैं। हे माँ! आप अनिर्वचनीया तुरीया हैं, समस्त विश्व को विवर्त करने वाली दुरधिगम निस्सीम-महिमा महामाया परम-ब्रह्म की पट्टमहिषी, पटरानी हैं। साक्षात् परब्रह्मस्वरूपिणी चिन्मयी आदिप्रकृति। हे शिवे ! संसारचक्रस्वरूप श्रीचक्र में स्थित बीजाक्षर रूप शक्तियों से प्रकाशमान तथा मूलविद्या के नौ बीजमन्त्रों से प्रसूत, शोभाशालिनी आवरण-शक्तियों से परिवेष्टित, वेदों के मूल कारण ओंकार के कोषरूप श्रीचक्र के मध्य त्रिकोण के बिन्दुचक्रस्वरूप सिंहासन में विराजमान तुम परब्रह्मात्मिका हो। देवि ललिते ! आपका भजन करने वाला साधक विद्याओं के ज्ञान से विद्यापतित्त्व एवं धनाढ्यता से लक्ष्मीपतित्त्व को प्राप्त कर ब्रह्मा एवं विष्णु के लिये 'सपत्न' अर्थात् अपरपति प्रयुक्त असूया का जनक हो जाता है। वह अपने सौन्दर्यशाली शरीर से रतिपति काम को भी तिरस्कृत करता है एवं चिरजीवी होकर पशु-पाशों से मुक्त जीवन्मुक्त अवस्था को प्राप्त होकर 'परानन्द' नामक रस का पान करता है।

निर्विशेष निर्गुण निराकार और सगुण साकारस्वरूपा माँ तुम्हारे मधुमय कमल-कोमल चरणों में मेरा कोटि-कोटि सभक्ति प्रणाम। माँ मेरी प्रेममयी माँ ! जगद्धात्री माँ ! करुणामयी माँ ! यह तुम्हारा असहाय, अबोध, अज्ञानी बालक तुम्हारे चरणों

की शरण है। हे अशरण-शरण, कल्याणमयी माँ, इस असार संसार में बिना तुम्हारी कृपादृष्टि की वृष्टि के जगत् के सभी उपाय, सब साधन परित्राण-परायणे शरणागत वत्सले! कृपामयी! करुणामयी! कल्याणमयी! इस शरणागत दीन आर्त्त शिशु को अपने चरणों में आश्रय प्रदान करो।

स्वात्मशक्ति श्रीविद्या ही ललिताकामेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी हैं, वह महाकामेश्वर के अङ्क में विराजमान हैं। उपाधिरहित शुद्ध स्वात्मा ही महाकामेश्वर हैं। सदानन्दरूप उपाधिपूर्ण स्वात्मा ही पर-देवता महात्रिपुर ारी कामेश्वरी ललिता हैं। श्रीविद्या राजराजेश्वरी पञ्चप्रेतासन पर विराजती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये पञ्चमहाप्रेत हैं। निर्विशेष ब्रह्म ही स्वशक्ति विलास द्वारा ब्रह्मा, विष्णु आदि पञ्च-आख्याओं को प्राप्त होकर वामादि तत्तच्छक्ति के सान्निध्य से सृष्टि, स्थिति, लय, निग्रह, अनुग्रह रूप पञ्च-कृत्यों को संपादित करता है। हे मातेश्वरी! आपकी चार भुजाओं में पाश, अङ्कुश, इक्षुधनु और पञ्च-पुष्पबाण सुशोभित हैं। पाश-इच्छाशक्ति, अङ्कुश-ज्ञानशक्ति तथा बाण व धनु क्रियाशक्तिस्वरूप हैं। हे श्रीसुन्दरी! ब्रह्मा, विष्णु, महेश- ये त्रिदेव, अग्नि, सूर्य, चन्द्र- ये तीनों तेज, मन्त्र, उत्साह और प्रभुता, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती- ये तीनों शक्तियां, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित-तीन स्वर, स्वर्ग, मर्त्य, पाताल-ये तीनों लोक, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति-तीन पद, सुवर्ण, रजतादिमय तीन पुष्कर, ऋक्, यजुः, साम-ये तीन ब्रह्म वेद, अ, उ, म- तीन वर्ण, धर्म, अर्थ, काम तीन वर्ग आदि जहां भी तीन रूपों का समन्वित रूप हो वह सभी परमार्थतया आपके त्रिपुरा नाम से अन्वित हो जाता है। अम्ब! अमृत से परिपूर्ण कल्याण की वर्षा करने वाली एवं लक्ष्मी को स्वयं वरण करने वाली मंगलमयी दीपमाला की भाँति आपकी सेवाओं ने आपके चरणकमलों में भक्तिभाव रखने वाले मनुष्यों के समस्त मनोरथों को पूर्ण कर दिया। जननी! मेरी तो बस यही स्पृहा है कि परमोत्कृष्ट सुधा से परिप्लुत तथा उदीयमान अरुण-वर्ण सूर्य की समता करने वाले आपके अरुण श्रीविग्रह के संन्निकट पहुंचकर आपकी वन्दनाओं के समय मेरे नेत्र अश्रुजल से परिपूर्ण हो जायें। माँ, प्रभुत्वभाव से कलुषित ब्रह्मा आदि कितने देवता हो चुके हैं जो प्रत्येक युग में प्रलय से अभिभूत

केन्तु एक वही व्यक्ति स्थिरसिद्धियुक्त विद्यमान रहता है जो एक बार
ों में प्रणाम कर लेता है। त्रिपुरसुन्दरी! आपमें भक्तिभाव रखनेवाले
बार भी आपकी करुणा से अङ्कुरित सुशोभन कटाक्ष को पाकर कामदेव
र्यशाली हो जाते हैं। त्रिकोण में निवास करने वाली एवं तीन नेत्रों
माता त्रिपुरसुन्दरी, वेद "ह्रीं" कार को ही आपका नाम बताते हैं,
नके संस्मरण में आ गया वे भक्तजन यमदूतों के भय को त्यागकर
के साथ नन्दनवन में क्रीडा करते हैं।

रसुन्दरी, मैं आपकी ही भक्ति से परिपूर्ण हूँ और आपकी ओर ही दृष्टि
ूँ। अतः आप मुझ अनाथ की ओर मनोरथों को पूर्ण करने में कल्पवृक्ष
रुणासागर स्वरूप अपने कटाक्षों से देख तो लें। जगद्धात्री माँ, परब्रह्म-
ात् परब्रह्मविद्यारूपिणी तुम्हीं हो और तुम ही प्रत्यक्-चैतन्य ब्रह्मस्वरूप
हो। माँ, तुम ही दश महाविद्या तथा अनन्त उपविद्यास्वरूपा हो।
न्दिते ! सर्वशास्त्रमहाताप्तर्यगोचरे ! भगवति ! सर्वातीत होती हुयी भी
पा हो। सर्वस्त्रीस्वरूपा ! जड, चैतन्य एवं चराचरस्वरूपा भी तुम ही हो।
सुकोमल मधुर चरणारविन्दों में कोटि-कोटि साष्टाङ्ग प्रणाम।

।।माँ! मेरी आनन्दमयी प्रेममयी माँ!।।